कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 09 दिसम्बर, 2025

किसान दिवस: अन्नदाता की भूमिका, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा

अनुपम [1*] और तेजेंद्र कुमार[1]

[1]उद्यान विज्ञान विभाग, आर एस.एम.महाविद्यालय धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.) -246761

***E-mail: anupamshakya452@gmail.com**

भूमिका

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की सभ्यता, संस्कृति और अर्थव्यवस्था की जड़ें कृषि में निहित हैं। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में किसान को अन्नदाता, जीवनदाता और राष्ट्र निर्माता के रूप में सम्मान प्राप्त रहा है। देश की विशाल जनसंख्या के लिए भोजन की व्यवस्था करने वाला किसान न केवल खेतों में पसीना बहाता है, बल्कि प्राकृतिक आपदाओं, आर्थिक अस्थिरता और सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हुए राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है। किसानों के इसी अमूल्य योगदान को सम्मान देने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 23 दिसंबर को किसान दिवस मनाया जाता है। किसान दिवस भारत के पाँचवें प्रधानमंत्रीचौधरी चरण सिंहकी जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। वे किसानों के अधिकारों, ग्रामीण विकास और कृषि सुधारों के सशक्त समर्थक थे। उनका स्पष्ट मत था कि जब तक किसान सशक्त नहीं होगा, तब तक देश की प्रगति अधूरी रहेगी।

चौधरी चरण सिंह और किसान हितैषी विचारधारा

चौधरी चरण सिंह का जीवन किसानों के कल्याण को समर्पित रहा। उन्होंने जमींदारी उन्मूलन, भूमि सुधार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किए। उनका मानना था कि कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि भारत की आत्मा है। उन्होंने किसानों को शोषण से मुक्त करने, उन्हें भूमि का अधिकार दिलाने और उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए अनेक नीतियाँ लागू कीं।

उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि भारत की बड़ी आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। किसान दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि नीति निर्माण में किसानों की आवश्यकताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

भारतीय कृषि का महत्व

भारतीय कृषि न केवल देश की खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करती है, बल्कि रोजगार सृजन, कच्चे माल की आपूर्ति और निर्यात में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में लगभग आधी आबादी को रोजगार प्राप्त होता है। धान, गेहूँ, दालें, तिलहन, फल-सब्जियाँ, मसाले, चाय, कॉफी और फूलों का उत्पादन भारत को वैश्विक कृषि मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाता है।

हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, नीली क्रांति और हाल के वर्षों में बागवानी एवं पुष्प उत्पादन ने किसानों की आय बढ़ाने में योगदान दिया है। फिर भी, कृषि क्षेत्र आज भी अनेक संरचनात्मक समस्याओं से जूझ रहा है।

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 09 दिसम्बर, 2025

किसानों के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ

आज का किसान अनेक जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है।जलवायु परिवर्तनके कारण अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और तापमान में असामान्य वृद्धि फसलों को प्रभावित कर रही है।उत्पादन लागत में वृद्धि, जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई और श्रम की बढ़ती कीमतें, किसानों की आय को कम कर रही हैं।

इसके अतिरिक्त, बाजार मूल्य में अस्थिरता, न्यूनतम समर्थन मूल्य की सीमाएँ, बिचौलियों की भूमिका और भंडारण सुविधाओं की कमी किसानों के लिए गंभीर समस्या बनी हुई है। छोटे और सीमांत किसान विशेष रूप से इन समस्याओं से अधिक प्रभावित होते हैं।

आधुनिक कृषि और तकनीकी परिवर्तन

समय के साथ भारतीय कृषि में तकनीकी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। उन्नत बीज, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई, पॉलीहाउस खेती, जैविक खेती, सटीक कृषि (Precision Farming) और डिजिटल कृषि ने उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार किया है। मोबाइल ऐप्स, मौसम पूर्वानुमान, मृदा परीक्षण और ई-नाम जैसे प्लेटफॉर्म किसानों को नई जानकारी और बाजार से जोड़ रहे हैं। हालाँकि, इन तकनीकों का लाभ सभी किसानों तक समान रूप से नहीं पहुँच पा रहा है। इसके लिए प्रशिक्षण, जागरूकता और संस्थागत समर्थन की आवश्यकता है।

सरकार की योजनाएँ और किसान कल्याण

किसानों के जीवन स्तर में सुधार के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं।प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजनाके अंतर्गत किसानों को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता दी जाती है।प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनाप्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान की भरपाई में सहायक है।मृदा स्वास्थ्य कार्ड, कृषि यंत्रीकरण योजना, राष्ट्रीय बागवानी मिशनऔरकिसान उत्पादक संगठन (FPO) किसानों को वैज्ञानिक और संगठित खेती की ओर प्रेरित कर रहे हैं। इन योजनाओं का वास्तविक लाभ तभी संभव है जब उनका प्रभावी क्रियान्वयन हो और किसानों तक सही जानकारी पहुँचे।

समाज और युवाओं की भूमिका

किसान दिवस केवल किसानों को सम्मान देने का अवसर नहीं है, बल्कि समाज को आत्ममंथन करने का भी समय है। हमें किसानों के प्रति केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि सहयोग की भावना विकसित करनी होगी। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना, उचित मूल्य देना और कृषि को सम्मानजनक पेशा मानना आवश्यक है। आज के युवाओं को आधुनिक कृषि, कृषि उद्यमिता, स्टार्टअप्स और मूल्य संवर्धन की ओर आकर्षित करने की आवश्यकता है। इससे कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाया जा सकता है।

भविष्य की दिशा और निष्कर्ष

भविष्य की कृषि को सतत, जलवायु-संवेदनशील और लाभकारी बनाना समय की आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जैव विविधता, जैविक और प्राकृतिक खेती तथा तकनीक का संतुलित उपयोग ही कृषि को दीर्घकालिक समाधान प्रदान कर सकता है।

अंततः किसान दिवस हमें यह याद दिलाता है कि किसान केवल अन्न उत्पादक नहीं, बल्कि राष्ट्र की नींव है। उसके बिना जीवन, विकास और सभ्यता की कल्पना संभव नहीं।

किसान खुशहाल होगा,
तो देश समृद्ध होगा।

आइए, किसान दिवस के अवसर पर हम अपने अन्नदाता को नमन करें और उनके सम्मान, सुरक्षा और समृद्धि के लिए संकल्प लें।

किसान है धरती का सच्चा सपूत,
जिसके श्रम से मिलता हमें हर निवाला।
धूप, बारिश, आँधी सहकर भी,
वह खेतों में बोता है आशा का उजाला।
अन्नदाता को नमन हमारा,
किसान से ही है भारत निराला।

●●●